अक्तूबर २०१४

कीमत १२/-

दादा भगवान परिवार का

# अक्रम एक्सप्रेस

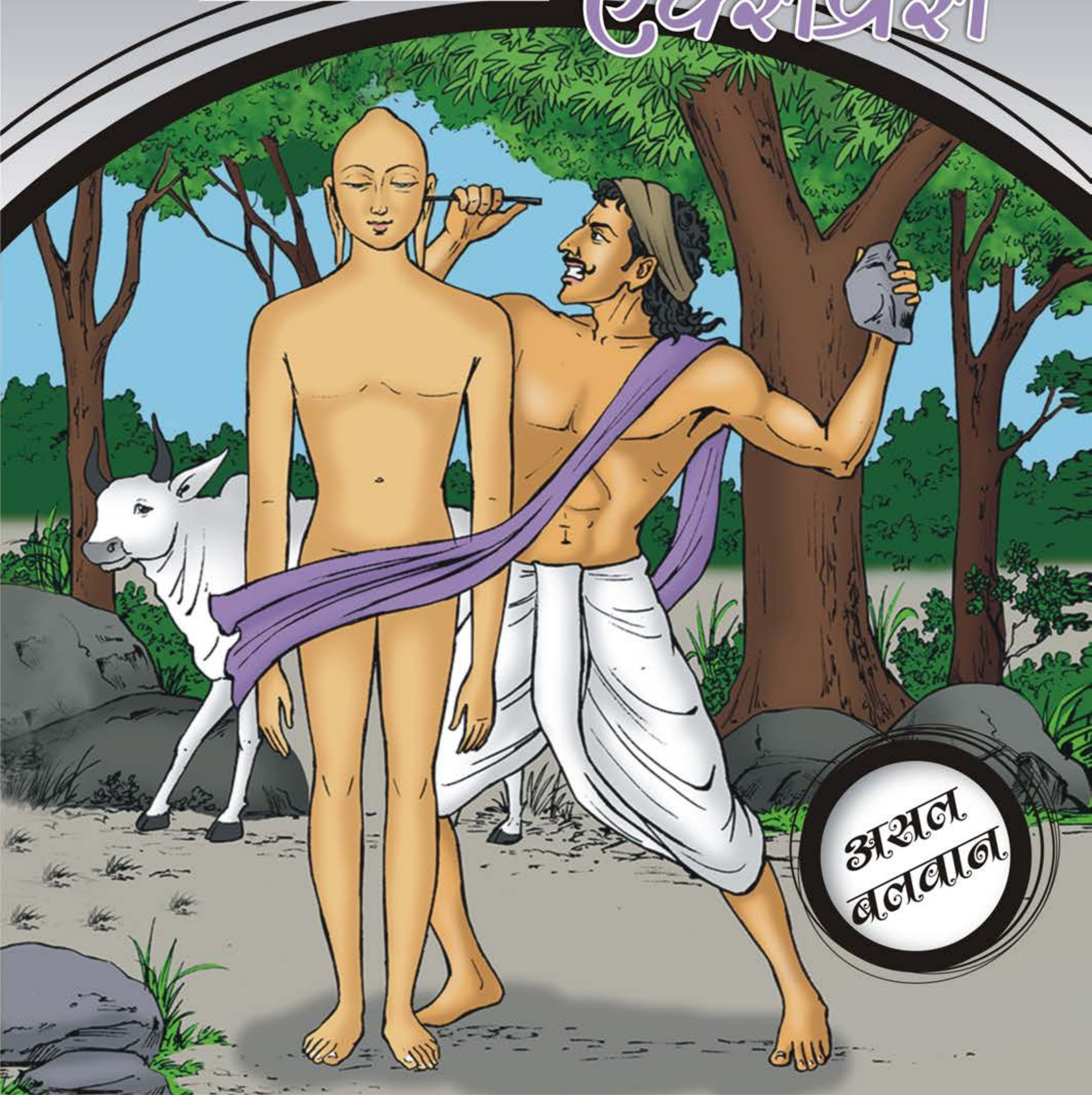

संपादकीय

बालमित्रों,

"टिट फॉर टेट - जैसे को तैसा" अभी तक हम इसे अपनी बहादुरी समझते थे। "मैं किसी का कुछ भी नहीं चलाऊँगा... मुझे कोई कुछ नहीं कह सकता, नहीं तो मैं ऐसा सुना दूँगा कि वह पूरी ज़िंदगी मेरे सामने बोलना भूल जाएगा..."

क्या सचमुच इसे बलवानपना कहेंगे? कभी हमने सोचा है कि संत, गुरु, ज्ञानी वास्तव में बहादुरी किसे कहते होंगे?

तो आईए, इस सुंदर अंक को पढ़कर और ज्ञानीपुरुष परम पूज्य दादाश्री "असल बलवान" किसे कहते हैं, विस्तार से वह समझें और जैसा ज्ञानी को अच्छा लगे, हम वैसे ही बलवान बनें।

- डिम्पल महेता

अनुक्रमणिका

दादाजी कहते हैं... ३
सबसे बड़ी कमज़ोरी... ४
यह तो नई ही बात!... ८
असल बलवानपना ...१०
जीवंत उदाहरण...१३
मीठी यादें ... १५
ऐतिहासिक गौरवगाथा... १६
अपने आपको परखकर देखो! ...१८
जोक्स... १९

असल बलवान

**Printed & Published by**

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

**Owned by**
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

**Printed at**
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

**Published at**
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक : ७
अखंड क्रमांक : १९
अक्तूबर - २०१४

......................

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

# अक्रम एक्सप्रेस

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

# दादाजी कहते हैं...

क्रोध-मान-माया-लोभ तो खुली कमज़ोरियाँ हैं। जब बहुत क्रोध आता है तब क्या तुमने हाथ पैर काँपते हुए नहीं देखें?

प्रश्नकर्ता : शरीर भी मना करता है कि तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, शरीर भी मना करता है कि हमें यह शोभा नहीं देता। इसलिए क्रोध तो कितनी बड़ी कमज़ोरी है! ऐसा है, इस संसार में गुस्सा होने की कोई वजह ही नहीं है। यदि कोई कहे कि "वह कहना नहीं मानता" फिर भी वह गुस्सा होने की वजह नहीं है, तब तुम्हें शांत रहकर काम लेना चाहिए। तुम कमज़ोर हो इसलिए गुस्सा हो जाते हो। और गुस्सा होना तो भयंकर निर्बलता है।

यदि कोई कहे कि "संसार में कभी-कभार क्रोध करने की ज़रूरत पड़ती है।" तब मैं कहूँगा कि "नहीं, ऐसी कोई वजह नहीं है कि जहाँ क्रोध करने की ज़रूरत हो। क्रोध तो निर्बलता है।" वह तो हो जाता है...

प्रश्नकर्ता : तो फिर यदि कोई मेरा अपमान करे और मैं शांति से बैठा रहूँ तो वह निर्बलता नहीं कहलाएगी?

दादाश्री : नहीं। ओहोहो! अपमान सहन करना तो बहुत बड़ा बलवानपना कहलाएगा! अगर अभी कोई हमें गाली दे लेकिन हमें कुछ भी न हो और उसके लिए मन भी नहीं बिगड़े, वही बलवानपना है।

और निर्बलता तो, ये सब किच-किच करते ही रहते हैं न, जीवमात्र झगड़ते ही रहते हैं, वह सब निर्बलता ही है। अपमान शांति से सहन करना महान बलवानपना है। अगर ऐसा एक ही अपमान पचा लें, तो सौ अपमान पचाने की शक्ति उत्पन्न जाती है।

सामनेवाला अगर बलवान हो तो उसके सामने जीवमात्र निर्बल हो ही जाता है, यह तो स्वाभाविक गुण है, लेकिन यदि निर्बल इंसान हमें परेशान करे, उसके बावजूद भी हम कुछ न करें तो वह बलवानपना है।

इंसान में खुद की शक्ति होने के बावजूद भी अगर सामनेवाले को परेशान नहीं करें, अपने दुश्मन को भी परेशान नहीं करें तो उसे बलवानपना कहते हैं।

# सबसे बड़ी कमज़ोरी

मेरी अनुमति के बगैर मेरे खंड में आने की तुम्हारी इतनी हिम्मत?
एक ज़रूरी संदेश लेकर आनेवाले सिपाही की बात सुने बिना बहादुरखान ने उसे सज़ा दे दी।
इस तरह कमज़ोर लोगों को परेशान करके बहादुरखान अपनी बहादुरी दिखाते थे।
इतना ही नहीं खाने के स्वाद में भी जरा अलग हो जाए तो राजा रसोईए को भी नहीं छोड़ते और उसे दंड देते।
विष्णुप्रसाद बहादुरखान के मुख्य सलाहकार थे। राजा के ऐसे व्यवहार से वे परेशान थे।
राजाजी, एक बुजुर्ग होने के नाते आप से एक बात कहना चाहता हूँ।
क्रोध बहुत बड़ी कमज़ोरी है। क्रोध में इंसान अच्छे - बुरे का विवेक खो देता है। इसलिए आपको क्रोध करना शोभा नहीं देता।

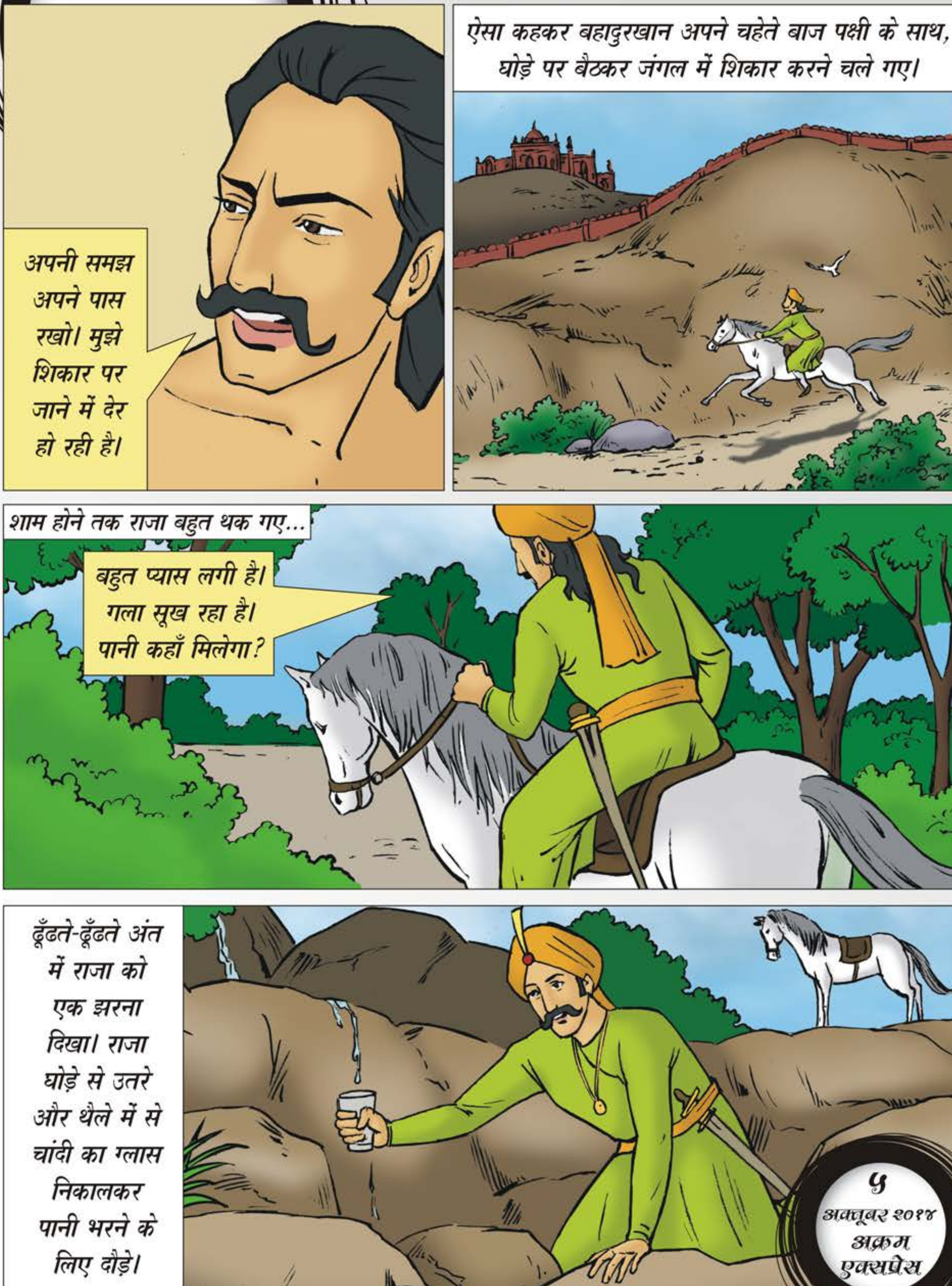
अपनी समझ अपने पास रखो। मुझे शिकार पर जाने में देर हो रही है।
ऐसा कहकर बहादुरखान अपने चहेते बाज पक्षी के साथ, घोड़े पर बैठकर जंगल में शिकार करने चले गए।
शाम होने तक राजा बहुत थक गए...
बहुत प्यास लगी है। गला सूख रहा है। पानी कहाँ मिलेगा?
ढूँढते-ढूँढते अंत में राजा को एक झरना दिखा। राजा घोड़े से उतरे और थैले में से चांदी का ग्लास निकालकर पानी भरने के लिए दौड़े।

बूंद-बूंद करके पूरा ग्लास भर गया। राजा का धीरज टूट गया। जैसे ही राजा ने मुँह से ग्लास लगाया तब...
फररर... करके बाज पक्षी आया और राजा का ग्लास जमीन पर गिर गया।
मूर्ख, यह क्या किया? कुछ होश है तुझे?
राजा ने फिर से ग्लास भरा, मुँह से लगाने गए कि बाज ने फिर से ग्लास गिरा दिया।
नालायक, तेरी इतनी हिम्मत। तू मेरे हाथ में होता तो तुझे कुचल देता।
तीसरी बार भी जब बाज ने ग्लास गिरा दिया तब राजा का दिमाग़ गया। तलवार की एक घात से उन्होंने बाज को मौत के घाट उतार दिया।
क्रोध की वजह से राजा के हाथ-पैर काँप रहे थे।
मुझे परेशान करने की सज़ा देखी तूने?
अरे, लेकिन मेरा ग्लास तो नीचे गिर गया। अब तो मुझे सीधे झरने में से ही पानी पीना पड़ेगा।

ऐसा सोचकर राजा पथरीले रास्ते पर चलकर, जहाँ से पानी टपक रहा था उस स्थान पर पहुँच गए। लेकिन वहाँ पहुँचकर राजा एकदम चौंक गए।
यह क्या? यहाँ तो ज़हरीला साँप पड़ा है।
इसका मतलब बाज ने मेरी जान बचाई और बदले में मैंने उसे क्या दिया? मौत!
नीचे उतरकर राजा ने मरे हुए बाज को खूब प्रेम से अपने हाथ में लिया। विष्णुप्रसाद के शब्द राजा के कान में गूंज रहे थे। अब उन्हें उन शब्दों का अर्थ समझ में आया।
भयंकर पश्चाताप के साथ राजा घोड़े पर बैठकर राजमहल की तरफ चल पड़े।
आज मैंने एक बड़ा पाठ सीखा। क्रोध सबसे बड़ी कमज़ोरी है। उसमें इंसान अच्छे-बुरे का विवेक खो देता है।

जिनमें क्रोध नहीं है, कमज़ोरी नहीं है, उसके पास कुछ तो होगा न? उसका जो शील नामक चरित्र है, उससे जानवर भी वश हो जाते हैं। बाघ-सिंह, सभी दुश्मन, पूरी सेना सबकुछ वश हो जाता है!

# यह तो नई

गुस्सा होने का मतलब क्या है? कि पहले खुद जलना और फिर सामनेवाले को जला देना, दियासलाई लगाई कि खुद भड़-भड़ जलना और फिर सामनेवाले को जला देना।

जिसमें क्रोध-मान-माया-लोभ, ये सभी कमज़ोरियाँ नहीं होतीं उसका प्रभाव पड़ता है! फिर वह सादी बात भी कहे, तो भी सब मान लेते हैं।

# ही बात!

जहाँ चरित्रवान हो, वहाँ लाखों गुंडें उसे देखते ही भाग जाते हैं! चिढ़चिढ़े आदमी से कोई नहीं भागता, बल्कि मारते भी हैं! दुनिया तो कमज़ोर को ही मारती है न!

# असल बलवानपना

"रोनक इज़ ए लूज़र, ही इज़ ए लूज़र।" कॉलेज के केन्टीन में बैठी शशांक की पूरी टोली ज़ोर-ज़ोर से यह गा रही थी।

"ए लूज़र, हिम्मत हो तो शशांक का चैलेन्ज स्वीकार करके फाइट कर! इस तरह बिल्ली क्यों बन गया है?" शशाँक के एक दोस्त ने रोनक को ललकारा। लेकिन रोनक किसी की भी परवाह किए बिना दरवाज़े की तरफ जाने लगा।

टाइम पास करने के लिए शशांक और उसके दोस्त रोज़ किसी न किसी विद्यार्थी का मज़ाक उड़ाते थे और उसे फाइट करने के लिए उकसाते थे। सामान्यत: कई विद्यार्थी उत्तेजित हो जाते थे। लेकिन रोनक को उकसाने में शशाँक और उसके दोस्त असफल रहे।

रोनक केन्टीन से बाहर निकल गया, लेकिन केन्टिन में रोनक के नाम का मज़ाक अभी भी चल रहा था।

इतने में कश्यप सर केन्टीन में आए। वैसे तो वे प्रोफेसर थे लेकिन उम्र में छोटे होने के कारण विद्यार्थियों के साथ हिलमिल जाते थे। चाय का कप और समोसे की प्लेट लेकर वे विनोद के साथ बैठ गए।

यह कैसा हँसी मज़ाक चल रहा है? चाय पीते हुए कश्यप सर ने विनोद से पूछा।

"और क्या होगा सर? शशाँक और उसके दोस्तों को नया बकरा मिल गया है। आज-कल रोज़ रोनक का

मज़ाक उड़ाकर उसे उकसाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन रोनक बिल्कुल छछूंदर जैसा है। इतना पहलवान होने के बावजूद उन लोगों के सामने कमज़ोर पड़ रहा है। मैंने उसे बहुत समझाया फिर भी वह इनका चैलेन्ज स्वीकार नहीं करता।" विनोद ने अकुलाहट के साथ जवाब दिया।

धीरे से मुस्कुराते हुए कश्यप सर ने कहा, "यह उसकी कमज़ोरी नहीं लेकिन बलवानपना है। वास्तव में कमज़ोरी तो उसे कहते हैं कि यदि कोई उकसाए और हम उत्तेजित हो जाएँ।"

कश्यप सर की बातें विनोद के गले नहीं उतर रही थीं, "लेकिन सर, शशाँक और उसके दोस्तों को पता ही नहीं है कि रोनक कराटे चैम्पियन है। उसका एक ही मुक्का उन्हें चुप करने के लिए काफी है।"

"नहीं विनोद, इंसान खुद में शक्ति होते हुए भी सामनेवाले को परेशान नहीं करे, खुद के दुश्मन को भी परेशान नहीं करे, तो उसी को बलवानपना कहते हैं। मुझे एक कहानी याद आई है, सुनोगे?"

"हाँ, ज़रूर सर" विनोद समोसा खाते-खाते बोला।

तो सुन। टोकियो के पास एक कुशल समुराई(तलवारबाज) रहते थे। ऐसा कहा जाता था कि वृद्ध होते हुए भी तलवारबाजी में उन्हें कोई हरा नहीं सकता था।

एक दिन एक युवा लड़ाकू समुराई के पास आया। थोड़े ही समय में उस युवक को तलवारबाजी में बहुत प्रसिद्धी मिली थी। लेकिन वह सिर्फ तलवारबाजी के लिए ही प्रसिद्ध नहीं था, उसके उत्साह और आक्रोश के लिए भी वह बहुत जाना जाता था। थोड़े समय में ही उसने बहुत सी लड़ाईयाँ लड़ीं और प्रत्येक लड़ाई में उसे जीत ही मिली थी। जीतने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता था। अपने प्रतिस्पर्धी का अपमान करके उसे उकसाता और युक्ति से जीत जाता।

समुराई को हराने के इरादे से वह समुराई के पास आया था। शहर के मध्य भाग में उसने समुराई को बुलाया और लड़ने के लिए ललकारा। यह बात पूरे शहर में फैल गई। समुराई और युवक लड़ाकू की लड़ाई देखने के लिए शहर में भीड़ इकट्ठी हो गई।

आदत के अनुसार युवक ने वृद्ध समुराई को उकसाने का बहुत प्रयत्न किया। समुराई का अपमान करने में उसने कोई कसर नहीं छोड़ी। युवक बहुत क्रोधित हो गया लेकिन समुराई बिल्कुल भी विचलित नहीं हुए। बल्कि उन्होंने हार स्वीकार कर ली।

समुराई के ऐसे व्यवहार से समुराई के शिष्यों

को बहुत हताशा हुई, "गुरुजी आपने ऐसी उद्दंडता कैसे चला ली। आपने तलवार का इस्तेमाल करने के बजाय हार मानना क्यों योग्य समझा? अब शहर के लोग आपको कायर समझेंगे।

हल्की मुस्कुराहट के साथ समुराई बोले, "क्रोध करना, विचलित हो जाना, चिढ़ जाना, ये तो सारी खुली कमज़ोरियाँ हैं। अपमान शांति से सहन करना बहुत बड़ा बलवानपना है। कमज़ोर आदमी हमें परेशान करे फिर भी हम उसे कुछ भी न करें, यही बलवानपना है, समझ में आया तुझे?"

कश्यप सर की कहानी सुनकर विनोद की आँखें खुल गई और मन ही मन उसे रोनक के प्रति आदरभाव हुआ।

"अरे, बातों-बातों में समय का ख्याल ही नहीं रहा।" घड़ी देखकर कश्यप सर बोले, "मैं चलता हूँ, बाय विनोद।"

ऐसा कहकर कश्यप सर अपना बैग लेकर कैन्टीन से बाहर निकल गए। विनोद अभी भी कश्यप सर की बातें याद कर रहा था तभी उसने शशाँक की आवाज़ सुनी, "ए कश्यप सर के चमचे। हो गई तेरी चमचागिरी? मार्क्स ज्यादा लाने के लिए कितनी चमचागिरी करेगा?"

"एय..." मुंह तोड़ जवाब देने के लिए विनोद ने मुँह तो खोला लेकिन तभी उसे कश्यप सर की बात याद आ गई और वह चुप हो गया।

"क्यों? जवाब देने की हिम्मत नहीं है? क्या तू भी अपने दोस्त की तरह बिल्ली बन गया है?" शशाँक विनोद को छेड़ने का प्रयत्न कर रहा था।

विनोद की स्थिरता देखकर शशाँक व्याकुल हो गया। लेकिन उस दिन पहली बार विनोद ने बिल्कुल भी चिढ़े बिना, शांति से अपमान सहन करके बलवानपना का अनुभव किया। और उसे बहुत अच्छा लगा।

# जीवंत उदाहरण

यह बात है, एक छोटी सी अफ्रीकन अमरीकन(ब्लेक) लड़की रूबी ब्रीजिस की।

रूबी ब्रीजिस का जन्म अमरीका के मिसीसिपी शहर के एक बहुत ही गरीब परिवार में हुआ था। जब वह चार साल की थी तब उसके पिता की नौकरी छूट गई। १९५७ में उसका पूरा परिवार न्यू आर्लीन्स शहर में जाकर रहने लगा। उसके माता-पिता बहुत ही धार्मिक थे और कड़ी मेहनत से परिवार का गुज़ारा चला रहे थे।

न्यू आर्लीन्स में उस समय ब्लेक(अफ्रीकन अमरीकन) और व्हाईट बच्चे अलग-अलग स्कूल में जाते थे। इस वजह से ब्लेक बच्चों को व्हाईट बच्चों की तरह अच्छा शिक्षण नहीं मिल पाता था। ऐसा भेदभाव अमरीका के नियमों के विरुद्ध था।

इस भेदभाव को मिटाने के लिए १९६० में एक जज ने छः साल की रूबी को विल्यम फ्रान्ट्ज एलिमेन्टरी स्कूल में पहली क्लास में एडमिशन दिलवाया। उसके माता-पिता को अपनी बेटी पर गर्व हुआ, लेकिन शहर के व्हाईट लोगों को यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगी।

स्कूल के पहले दिन, स्कूल के बाहर क्रोधित व्हाईट लोगों की भीड़ रूबी को गाली देने लगी। व्हाईट बच्चों के माता-पिता को यह मंजूर नहीं था कि उनके बच्चे ब्लेक बच्चों के साथ पढ़ें। इसलिए उन्होंने स्कूल का बहिष्कार किया और स्कूल के बाहर ज़ोर ज़ोर से "ओन्ली व्हाईट, नो ब्लेक" के नारे लगाने

लगे। लोगों की कड़वी बातें शांति से सुनकर रूबी क्लास में पहुँच गई।

क्लास रूम में देखा कि टीचर के सिवाय क्लास में कोई भी नहीं था। पूरी क्लास खाली थी।

महीनों तक रूबी इसी तरह लोगों के विरोध के बीच स्कूल जाती रही, लेकिन कभी भी किसी के सामने एक शब्द भी नहीं बोली, न ही उस परिस्थिति से भागी। उसका लक्ष्य तो सिर्फ पढ़ाई की ओर ही था।

उसकी टीचर मिसीस हेनरी कहती, "रूबी रोज़ हँसते हुए स्कूल आती और बहुत ही ध्यान से पढ़ाई करती।"

कई बार उसकी टीचर मन में सोचती कि इतनी छोटी सी बच्ची लोगों के ऐसे बहिष्कार के बीच इतनी शांत कैसे रह पाती है??

एक दिन, मिसीस हेनरी क्लास रूम की खिड़की के पास खड़े रहकर रूबी को स्कूल की बिल्डिंग की तरफ आते हुए देख रही थीं। रोज़ की तरह, विरोध करते हुए लोगों के बीच से वह चलकर आ रही थी। अचानक वह रुक गई। मिसीस हेनरी को दूर से लगा कि जैसे रूबी भीड़ से कुछ कह रही हो। उन्हें आश्चर्य हुआ।

रूबी जब क्लासरूम में आई तब उन्होंने उससे पूछा, "रूबी, तुम भीड़ के पास खड़ी रहकर लोगों से क्या कह रही थी?"

"नहीं टीचर, मैं उन लोगों से कुछ कहने के लिए नहीं खड़ी थी" रूबी ने जवाब दिया।

"लेकिन मैंने तो तुम्हें बात करते हुए देखा। तुम्हारे होठ भी हिल रहे थे" टीचर को रूबी के जवाब पर आश्चर्य हुआ।

"टीचर, मैं उनसे बात नहीं कर रही थी। मैं तो उनके लिए प्रार्थना कर रही थी। जिन लोगों को मेरे लिए इतना ज्यादा अभाव और द्वेष है, उनके लिए मैं रोज़ सुबह स्कूल आने से पहले प्रार्थना करती हूँ। लेकिन आज मैं प्रार्थना करना भूल गई थी, इसलिए मैं प्रार्थना कर रही थी कि,

"हे प्रभु, इन लोगों को माफ कर देना। भले ही ये लोग बुरा बोलकर मेरा अपमान कर रहे हैं। लेकिन इन लोगों को पता नहीं है कि ये लोग क्या कर रहे हैं।"

इतनी छोटी सी बच्ची का यह कितना बड़ा बलवानपना है। ज़बरदस्त अपमान को भी उसने शांति से पचा लिया और अपमान करनेवालों के लिए प्रार्थना की!

# मीठी यादें

एक ब्रह्मचारी भाई थे। उन्हें हर रोज़ शाम के चार बजे भूख लगती। तब वे यह पूछने के लिए रसोई में फोन करते कि क्या नाश्ता है? और कभी वे खुद आकर नाश्ता कर जाते या फिर कभी किसी को नाश्ता लेने के लिए भेजते।

इसी तरह एक दिन उन्होंने नाश्ता के बारे में पूछने के लिए फोन किया। उस समय जिन बहन के पास फोन था, वे बहन उस समय नीरू माँ के पास थीं। बात सुनकर बहन ने कहा, "मैं नाश्ते का डिब्बा तैयार कर रही हूँ। आप आकर ले जाइए।" नीरू माँ ने यह सुना। नीरू माँ ने पूछा, "किसका फोन था?" उन बहन ने नीरूमाँ के पूछते ही सारी बातें बताईं।

नीरू माँ ने पूछा, "तुमने क्यों उनसे आकर ले जाने के लिए कहा? भेजने की व्यवस्था करनी चाहिए।"

बहन ने कहा, "वे तो ले जाएँगे। कोई नहीं है। मैं थोड़े ही देने जाऊँगी?" ऐसा कहकर बहन चली गईं। नीरू माँ कुछ नहीं बोलें।

थोड़ी देर बाद नीरू माँ बेड रूम से बाहर आईं और उन बहन से पूछा, "डिब्बा तैयार हो गया है?" बहन ने "हाँ" कहा। नीरू माँ ने डिब्बा खोलकर देखा। फिर कहा, "मैं देने जा रही हूँ।"

यह सुनकर वे बहन तो घबरा ही गईं। ऐसी धूप में नीरू माँ नाश्ता देने जाएँ तो अच्छा लगेगा। उन्होंने तुरंत कहा, "लाईए नीरू माँ, मैं दे आती हूँ।"

नीरू माँ ने कहा, "नहीं, तुम तो मना कर रही थीं न। मैं ही चली जाती हूँ।" ऐसा कहकर नीरू माँ तो चली गईं।

उसके बाद नीरू माँ ने उस बहन से कुछ नहीं कहा, लेकिन बाद में दूसरे भाई से कह रहे थे कि बच्चे काम में व्यस्त होते हैं। उन्हें जो चाहिए वह पहुँचाने की व्यवस्था हो तो अच्छा है। उन लोगों को यहाँ न आना पड़े। उनका टाइम इसमें थोड़े ही बिगाड़ना चाहिए?

**देखा मित्रों, नीरू माँ दादा का काम करनेवाले हर एक का कितना ध्यान रखती थीं!**

# ऐतिहासिक गौरवगाथा

जीतशत्रु एक न्याय प्रिय राजा थे। उनकी धारिणी नामक धर्मनिष्ठ रानी थीं। उनका एक गुणवान पुत्र था। उसका नाम खंधक था। पूर्वजन्मों के धर्म संस्कारों के फल स्वरूप उसका मन संसार में नहीं लगता था।

एक दिन गाँव में धर्मघोषसूरीजी महाराज पधारे। उनका त्यागमय उपदेश सभी को अच्छा लगा। राजपुत्र को भी अच्छा लगा। वैराग्यमय उपदेश सुनकर उसका मन संसार से उठ गया। घर जाकर उसने माता-पिता से दीक्षा लेने की अनुमति माँगी। उन्होंने खुशी-खुशी अनुमति दे दी। अनुमति मिलते ही कुमार ने दीक्षा ले ली। फिर उनका नाम खंधक मुनि रखा गया।

मुनिवर ने दीक्षा लेने के बाद आत्मकल्याण करने के लिए कठोर तपस्या शुरू कर दी। तपस्या से उनका शरीर सूख गया। चलते-चलते भीतर की हड्डियाँ भी खड़खड़ाने लगीं। उन्हें किसी भी जीव पर न ही राग था और न ही द्वेष। वे मुनिवर इतने समताधारी थे। संकटों को हँसते हुए वे सहन कर लेते।

एक दिन विहार करते-करते वे अपनी बहन के गाँव में पधारे। उनकी बहन उस गाँव की रानी थीं। सुबह के समय बहन-बहनोई झरोखे में बैठे थे।

रानी की नज़र दूर से आ रहे तपस्वी पर पड़ी। उन्होंने मुनि को पहचान लिया। कई सालों बाद भाई-बहन के भूले हुए रिश्ते याद आ गए। भाई का सूखा हुआ शरीर देखकर बहन को बहुत दुःख हुआ। उनकी आँखों से आँसू गिरने लगे। वे सोचने लगीं, "क्या यही मेरे भाई हैं?" पहले तो मेरे भाई का शरीर कितना हृष्ट-पुष्ट था और आज अस्थिपंजर जैसा हो गया है। चलते-चलते भीतर की हड्डियाँ भी खड़खड़ा रही है।"

अचानक रानी की आँखों में आँसूं देखकर राजा को आश्चर्य हुआ। उन्होंने मुनि को नहीं पहचाना और उन्होंने रानी से भी कुछ नहीं पूछा। उन्हें रानी के चरित्र पर शंका हुई। कुछ भी सोचे बिना गुस्से में आकर, रानी को पता नहीं चले इस तरह उन्होंने सेवकों को हुक्म किया कि "जाओ, इस साधु की चमड़ी

उतारकर ले आओ।"

राज सेवकों ने दुःखी मन से राजा की आज्ञा तपस्वी मुनि को बताई। मुनि किसी भी संकट से नहीं डरते थे। अचानक आई हुई आफत से वे ज़रा भी नहीं घबराए। परिषह (दुःख) का समता से सामना करने के लिए खुद को समझा लिया और चमड़ी निकालने के लिए वे खुशी-खुशी तैयार हो गए। उन्होंने सोचा, कर्मों को पूरा करने का ऐसा अपूर्व अवसर फिर कब आएगा? जीव मात्र को नमस्कार करके उन्होंने समाधि लगा ली।

राजा की आज्ञा के अधीन राजसेवकों ने मुनि की चमड़ी उतारी। और जागृत मुनि आत्मा के ध्यान में रहकर उच्च भावना से केवलज्ञान प्राप्त किया और उन्हें तुरंत ही मुक्ति मिल गई।

जिस तरह फटे और घिसे कपड़ों को हम त्याग देते हैं उसी तरह मुनिवर ने नाशवंत शरीर को छोड़कर आत्मा के स्व-स्वभाव की सिद्धि प्राप्त करके अंतिम मृत्यु सुधार ली।

मुनिवर तो मृत्यु के बाद मोक्ष में गए। लेकिन खून से सनी हुई उनकी मुँह पट्टी वहीं रह गई। मांस समझकर आकाश में उड़ते गीध ने उसे उठा लिया, लेकिन खाने की चीज़ नहीं है, बेकार चीज़ है, यह जानकर उसे फेंक दिया।

योगानुयोग वह मुँह पट्टी ठीक राज दरबार में ही गिरी। भाई की याद अभी भूली नहीं थी, तभी खून से सनी हुई मुँह पट्टी देखकर बहन को बहुत आघात लगा। वे ज़ोर ज़ोर से रोने लगीं। रानी को रोते हुए देखकर राजा ने कारण पूछा, "रानी, क्यों रो रही हो?"

रानी ने पूछा, "मेरे भाई को किसी ने मार दिया?"

राजा तो चौंक ही गए, "वे तुम्हारे भाई थे? उन्हें तो मैंने ही मरवा दिया।" राजा को खुद के किए हुए पाप का बहुत पश्चाताप हुआ, "नहीं सोचने जैसा मैंने सोचा। नहीं करने जैसा मैंने किया, अब मेरा उद्धार कैसे होगा?"

इस घटना से राजा-रानी का मन वैराग्य की तरफ मुड़ा। संसार से मोह उठ गया और राजपाट छोड़कर दोनों ने दीक्षा ले ली। कठोर तपस्या करके भयंकर पाप कर्मों को खत्म किया। आत्म शुद्धि का यह एक ही छोटा और सरल मार्ग था। अंत में वे भी मोक्ष में गए।

# अपने आप को परख कर देखो!

इस अंक से हमें मिली हुई निर्बलता और बलवानपना की समझ के अनुसार, नीचे दिए गए प्रसंग में बलवान और निर्बल व्यक्तियों को ढूँढकर उन्हें दो टीमों में बाँट दें, टीम "ए" में निर्बल और टीम "बी" में बलवान व्यक्तियों को रखें। इन दोनों टीमों में से, आप किस टीम को विजयी घोषित करोगे?

"श्लोक तुम से कितनी बार कहा है कि रूम में इतना फैलाव मत करो। रूम थोड़ा साफ रखा करो" रूम की हालत देखकर सोनिया को अकुलाहट हुई।

तभी बाहर स्कूटर का हॉर्न सुनाई दिया। "श्लोक कितनी देर है? जल्दी कर!" बाइक पर आए हुए प्रतीक ने आवाज लगाई।

"बस दो ही मिनट" बालकनी में जाकर श्लोक ने जवाब दिया। फटाफट कपड़े बदलकर श्लोक भागा। सीढ़ियों के पास वह सुमित से टकराया और सुमित की थैली नीचे गिर गई।

"क्या कर रहा है चश्मिश? क्या तुझे दिखाई नहीं देता?" श्लोक ने सुमित से कहा।

खुद की भूल नहीं होते हुए भी हमेशा की तरह आज भी सुमित ने शांति से श्लोक की बात सुन ली और अपनी थैली उठाकर चलने लगा।

जैसे ही श्लोक प्रतीक के पीछे बाइक पर बैठा कि प्रतीक ने उसे धमकी दी, "तुझ से कितनी बार कहा है कि टाईम पर तैयार हुआ कर। अब अगर तू टाईम पर तैयार नहीं हुआ तो तुझे लिए बिना ही चला जाऊँगा।"

क्लासरूम में प्रतीक और श्लोक के फ्रेन्ड्स पिकनिक जाने के लिए डिस्कशन कर रहे थे। प्रतीक और श्लोक भी शामिल हुए। हर दूसरी बात पर प्रतीक को एतराज़ था। प्रतीक के ऐसे व्यवहार से तंग आकर सोहम खड़ा हो गया। "प्रतीक, प्लीज़ यार, तू शांति रख। एतराज़ करने के बजाय कुछ अच्छा सजेशन दे, नहीं तो चुप रह।"

थोड़ी ही देर में क्लास मोनिटर ने क्लासरूम में आकर कहा, "साइलेन्स प्लीज़।" यह सुनकर विनीत ने अपने फ्रेन्ड्स से कहा, "पिकनिक की बातें अब रिसेस में करेंगे।"

"विनीत तू भी बिल्कुल उल्लू जैसा है। ऐसे उल्लू की तरह मोनिटर की बात सुन रहा है। वह तो कहता रहता है।" सोहम ने कहा।

कुछ भी जवाब दिए बिना विनीत बैग लेकर अपनी जगह पर बैठ गया।

| टीम ए - निर्बल टीम : | टीम बी - बलवान टीम : | विजेता टीम : |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

यह अलग है... यह मजेदार है...
एक प्रयास, अलग ढंग से उत्सव मनाने का,
आइये और इसका हिस्सा बनिए,
एक 'अनोखी' दीवाली अभियान

कब? १०अक्तूबर २०१४

कहा? Kids.dadabhagwan.org

Akram Express

October 2014
Year : 2, Issue : 7
Conti. Issue No.: 19

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
LPWP Licence No. CPMG/GJ/119/2014
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month



# हा... हा... ही... ही...

अंग्रेजी स्कूल के एक सरने विधार्थी से पूछाः यदि तुम्हें एक ही बुक पसंद करने को कहे तो तुम कौन सी बुक पसंद करोगे?
विधार्थीः 'चेकबुक सर'

शरारती चीकु ने एक बार अपनी मम्मी से पूछाः मम्मी आप के बाल सफेद क्यों होते जा रहे हैं?
मम्मीः तेरी एक-एक शरारत से मेरे एक-एक बाल सफेद होते जा रहे हैं।
चीकुः अब मुझे मालूम हुआ कि दादी के सभी बाल सफेद क्यों हैं!!!

चीन्टुः यह सूरज रात को क्यों नहीं निकलता?
पीन्टुः निकलता होगा लेकिन अंधेरा इतना अधीक होता है इसलिए दिखाईं नहीं देता।

रामुः ऐसा कैसे कह सकते हैं कि गाजर खाने से आँखें अच्छी रह सकती है?
शामुः तूने कभी भी खरगोश को चशमें पहने देखा है।

मगनलाल मास्तरः "बंजर जमीन किसे कहते हैं?"
मनीयाः "जहाँ पर कुछ भी नहीं उगता।"
मास्तरः "बंजर जमीन का उदाहरण दीजिए।"
मनीयाः "मेरे पापा का सिर।"

टीचरः संगीत और डिस्को में क्या फर्क है?
विधार्थीः दोनों में पाँव से सिर तक का फर्क है।
टीचर : कैसे?
विधार्थीः संगीत में लोग सिर हिलाते हैं और डान्स में पाँव।

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद # हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद ## हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.